Shivoham

Kailash Kher

आत्मा ने परमात्मा को लिया देख ध्यान की दृष्टि से।
प्रकाश हुआ हृदय – हृदय , बेड़ा पार हुआ इस सृष्टि से।

है एक ओंकार निरंजन निरंकार
है अजर अमर आकर विश्वधार मन भजे।

शिवोहम शिवोहम शिवोहम . . .
शिवोहम शिवोहम शिवोहम . . .

भूख में तपसी तप रहा , भोजन बीच पठाय।
विलप में साधु हंस रहा , अपना ही उपजा खाय।
शेष अशेष विशेष में समर्पण के भाव में।

शिवोहम शिवोहम शिवोहम . . .
शिवोहम शिवोहम शिवोहम . . .

ठहर शांत एकांत में , साधके मूलाधार ।
सर्जन स्वाधिष्ठान से , सूर्य मणि चमकार ।
विशुद्धि आज्ञा सहसरार तक गूंजे अनाहत ।

शिवोहम शिवोहम शिवोहम . . .
शिवोहम शिवोहम शिवोहम . . .

खाली को तो भर दिया , भरे में भरा न जाए।
पानी में प्यासा रहा , तट पे बैठ लखाय।
प्रष्न व्यस्न में उलझ – उलझ हां बिरथा गया जन्म ।

शिवोहम शिवोहम शिवोहम . . .
शिवोहम शिवोहम शिवोहम . . .

Tištěno z pisnicky-akordy.cz Sponzor: www.srovnavac.cz - vyberte si pojištění online!